शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2018
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

सम्पादकीय

इतिहास अध्ययन के दुष्परिणाम

विनोबा

आजकल जो तालीम दी जाती है, उसमें ऐसे तो कई दोष हैं, लेकिन एक बड़ा भारी दोष यह है कि उसमें लोगों के दिमाग में इतिहास के नाम पर कई चीजें ठूंसी जाती हैं। तालीम में सबसे बड़ा भारी खतरा इस इतिहास शिक्षण ने खड़ा किया है। इतिहास यानी 'इति ह आस' यानी इस प्रकार हुआ। परंतु आज तो इतिहास में जो नहीं हुआ वह भी लिखा जाता है। इतिहास जितने झूठे होते हैं, उनती कल्पित कहानियां भी झूठी नहीं होतीं, क्योंकि कहानी लिखने वाला पहले ही लिख देता है कि सारी कहानी कल्पित है। इतनी तो सच्चाई उसमें होती ही है। किंतु इतिहास लिखने वाला दावा करता है कि 'मैंने सारा सत्य लिखा है और दूसरा झूठ लिखता है। क्या आप समझते हैं कि इतिहास नाम की जो चीज पढ़ायी जाती है, वह भी कोई चीज है ? ये जो दो महायुद्ध हो गए, उनका इतिहास जर्मनी ने एक ढंग से लिखा होगा, तो रूस, इंग्लैंड ने दूसरे ढंग से। किसने क्या गुनाह किया, क्या अन्याय किया, कौन-सी घटना कब घटी, यह सब झूठा लिखा जाता है। महत्व के कागज जला दिए जाते हैं और फिर सबूत के लिए झूठे कागज तैयार किए जाते हैं। महात्मा गांधी एक क्रांतिविरोधी व्यक्ति हैं, ऐसा उनके इतिहास में लिखा जाता था। अब लिखा जायेगा कि वे एक महापुरुष हो गये। ईश्वर की इतनी कृपा है कि 'वे हुए ही नहीं ऐसा नहीं लिखते। इतना बदल वे नहीं करते, यही उनकी कृपा है।

सारांश, इतिहास अपनी मर्जी से लिखे जाते हैं। लोगों के दिमाग विशेष प्रकार के बनाने के लिए पुरानी घटनाओं का उपयोग कर वह लोगों के सामने रखा जाता है। यह सारा इतिहास बच्चों को सिखाया जायेगा। इतिहास बनाने वाले मर गये और विद्यार्थियों के दिमाग कहानियों के बोझ के नीचे दबकर मर रहे हैं। आखिर मरे हुए राजाओं की नामावली रटने की जरूरत ही क्या है ? कौन-सी घटना कब घटी, यह सुनने की कोई जरूरत नहीं। कितने राजा हुए कोई हिसाब नहीं है। इन पेड़ों पर जितनी पत्तियां हैं, उतने राजा हो गये। उनका इतिहास पढ़कर क्या करेंगे ? इतिहास के नाम से लोगों के दिमाग ढाले जाते हैं। परिणामस्वरूप कुल प्रजा पूर्वग्रह से पीड़ित होती है और पुरुषार्थहीन भी बनती है। ये पुराने इतिहास जिस ढंग से लिखे जाते हैं, उसी ढंग से पढ़ते हैं, तो अपना-अपना अभिमान बनता है। उसमें सत्यनिष्ठा टिक नहीं सकती।

इतिहास का सार ग्रहण करें

जब तक इतिहास का यह आग्रह और अभिनिवेश टलता नहीं, तब तक प्रगति नहीं कर सकेंगे। पुराना इतिहास देखकर काम करना चाहेंगे, तो परिणाम ऐसा ही होगा। इसलिए सचमुच प्रगति करना चाहते हैं, तो इस युग में पुराने इतिहास का सार लेकर असार छोड़ देना चाहिए। इतिहास का बिलकुल उपयोग नहीं, ऐसा हम नहीं कहते। भगवान व्यास जी ने एक सुंदर इतिहास 'महाभारत' लिखा है। मनुष्य के विविध स्वभाव

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2018
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

किस प्रकार हो सकते हैं, इस पर अपना दर्शन लिखा है। इस प्रकार इतिहास से लाभ हो सकता है। लेकिन इतिहास का भूत सिर पर दबाव डालेगा, तो समाज की प्रगति कभी नहीं होगी। यह ठीक है कि पुराने लोगों ने जो पराक्रम किये, वैसे बुरे काम भी किये। तो, उनकी कुल-की-कुल चीजों का भार दिमाग पर क्यों उठाया जाये ? उनकी अच्छी चीजें लेकर बुरी चीजें छोड़नी चाहिए। अगर हम पुराने इतिहास से चिपके बैठेंगे तो यह विवेव शक्ति क्षीण हो जाएगी।

इतिहास का अध्यापन

मानवीय जीवन के मूल्य किस प्रकार सिद्ध होते गये और कैसे सिद्ध हुआ करते हैं तथा हम कहां और कैसे आकर पहुंचे हैं - इसका स्वरूप समझना यह इतिहास का काम है। मानव की विवेक बुद्धि के कंटेट्स क्या, कैसे हैं यह इतिहास पर से समझ में आता है। वह समझ में आता है तो मनुष्य की विवेक बुद्धि ठीक काम करती है और मनुष्य विवेकपूर्ण व्यवहार करने लगता है। भूतकालीन अनुभवों से कुछ सीखने के लिए इतिहास का अध्ययन करना होता है। हमारा विवेक बनाने के काम में जिन-जिन लोगों की मदद हुई उनकी जानकारी देना इतिहास का काम है। हमारा विवेक चार ने मिलकर बनाया - आदर्श राज्यकर्ता, संत-सत्पुरुष, साहित्यिक और वैज्ञानिक। इनकी जानकारी जिसमें मिले ऐसा इतिहास बच्चों को बताना चाहिए।

इतिहास शिक्षण का हेतु

अनादि भूत और अनंत भविष्य के बीच वर्तमान कहाँ छिपा रहता है, उसका पता भी नहीं लगता। देखते-देखते वह भूतकाल में समाविष्ट हो जाता है। इसलिए उसकी ओर देखने के बजाय कर्मयोग में उसका उपयोग कर लेना हे उसके प्रति मनुष्य का कर्तव्य है। जो मनुष्य यह करता है, वही सच्चा इतिहास है। काल-पुरुष की चपलता, मनुष्य के शारीरिक जीवन की क्षणिकता और आत्मा की अमरता - इसकी प्रतीति मनुष्य को करा देना ही इतिहास का कार्य है। यह कार्य जिसके जीवन में ओतप्रोत है, जिसने वर्तमान का उपयोग किया, उसी ने वास्तव में इतिहास को समझा।

- विनोबा साहित्य खंड 17, शिक्षा, स्त्री शक्ति